स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म के प्रति बी.एड. महाविद्यालय के व्याख्याताओं की जागरूकता अध्ययन करना

डॉ. आरती गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

कार्तिका चौहान
बी.एड.एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

भारत में विभिन्न आईसीटी उपकरण और प्लेटफार्म शिक्षकों को एक–दुसरे के बीच संसाधनों को साझा करने का और अनुकूलित करने और सीखने में मदद करने का अवसर प्रदान कर रहे है। सरकार ने देश के हर कोने तक इन्टरनेट की बड़े पैमाने तक पहुँच का लाभ उठाने के लिए डिजिटल इण्डिया अभियान जैसे कही पहल शुरू की है। स्वंय पोर्टल मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) की एक ऐसी पहल का हिस्सा है। जिसकी कल्पना वन नेशनल वन डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में की गई है जो शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करेगा। स्वयं पोर्टल का लक्ष्य शिक्षार्थियों के लिए संसाधन का भण्डार बनाना और एक मजबूत समुदाय का निर्माण करना। स्वयं ऑनलाईन प्लेटफार्म को और अधिक कुशल बनाने के लिए विभिन्न सुविधाओं और उपकरणों के साथ विकसित ओर अद्यतन किया दस्तावेज उपयोगकर्ता के प्लेटफार्म के माध्यम से नेविगेट करने और सुचारू रूप से उपयोग करने के लिए शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगा।

की वर्ड : *विद्यालय, महाविद्यालय, ई–शिक्षण, डिजिटल शिक्षा*

१. प्रस्तावना

छात्रों को उनकी तथा शिक्षार्थियों को उनकी सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक स्थिति तक सीमित और कौशल प्राप्त करने में मदद मिली है। यह इन्टरनेट के बड़े पैमाने पर प्रवेश डिजिटल इण्डिया अभियान जैसी विभिन्न सरकारी पहल से सम्भव हुआ है। डिजिटल शिक्षा की ओर बढ़ने के लिए अनुकूल माहोल तैयार किया है। स्वयं पोर्टल मानव संसाधन और विकास मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्र एक डिजिटल प्लेटफाम है जो शिक्षकों व छात्रों के लिए एक राष्ट्रीय बुनियादी ढ़ांचे के रूप में कार्य करता है। यह एक अनुठी पहल है। स्वयं ऑनलाईन पोर्टल जैसे प्लेटफार्म निर्देश और शिक्षक तैयारी लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग में परिवर्तन की लहर लाने की क्षमता रखते है। कोविड–19 से संबंधित स्कूल शिक्षा ऑनलाइन पोर्टल को सम्भव बनाती है। पूरे भारत में शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए तकनीकी के उपयोग में तेजी लाने तथा यह सीखने वाले की गति से लचीली और सीखने की अनुमति देता है और डिजिटल सामग्री सीमा का लगातार विस्तार करना है।

२. स्वयं ऑनलाईन प्लेटफाम

स्वयं पोर्टल भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) और अखिल भारतीय तकनीक शिक्षा परिषद द्वारा माइक्रोसॉफ्ट की मदद से तैयार किया गया एक ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल है। स्वयं ऑनलाइन एजुकेशन पोर्टल की घोषणा 1 फरवरी 2017 को पेश आम बजट से भारत सरकार

द्वारा की गई थी, जिसको 9 जुलाई 2017 को तत्कालीन राष्ट्रपति माननीय प्रणव मुखर्जी ने लांच किया।

इस ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल के द्वारा डिजिटल लोगों तक शिक्षा पहुँचाना है। लेकिन पोर्टल की सीमित पहुँच जागरूकता का अभाव एवं तकनीकी की कम जानकारी के कारण अभी तक इसका उपयोग केवल शहरों तक सीमित है। इस पोर्टल पर 9वीं कक्षा से लेकर स्नातकोतर तक के कोर्स उपलब्ध है तथा जो छात्र या शिक्ष प्रमाण पत्र लेना चाहे ले सकते है। हाई स्कूल से लेकर सभी पाठ्यक्रम के लिए वन स्टॉप वेब और मोबाइल आधारित इंटरक्टिव e- सामग्री विश्व विद्यालय स्तर किसी भी समय किसी भी आधार पर मल्टीमीडिया का उपयोग कर उच्च गुणवता वाला सीखने की अनुभव है। अत्याधुनिक प्रणाली जो आसान पहुँच निगरानी और प्रमाणन की अनुमति देती है। शंकाओं को दूर करने के लिए सहकर्मी समूह बातचीत और चर्चा मंच डिलीवरी का हाइब्रिड मॉडल जो कक्षा की गुणवता को बढ़ाता है।

स्वयं पोर्टल का उद्देश्य शिक्षकों को छात्रों से जोड़ना है ताकि वे पाठ्यक्रम शुल्क या अन्य खर्चो की चिन्ता किए बिना अपने ज्ञान के अन्तर को विकसित कर सकें।

३. अध्ययन का औचित्य

स्वयं इस मुद्दे को सम्बोधित करेगा की केन्द्र राज्य और निजी में गुणवतापूर्ण शिक्षक उपलब्ध नही है। देश में विश्वविद्यालय/संस्थानों के अलावा बड़ी संख्या में ऐसे संस्थानों में रिक्तियां भी है। लम्बे समय से नहीं भर रहे तो शिक्षाविदों ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने एक बड़ी व नई पहल शुरू की है। इसे स्वयं कहा जाता है जो ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए एक एकीकृत मंच और पोर्टल प्रदान करेगा। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और सभी उच्च शिक्षा विषयों और कौशल क्षेत्र को कवर करेगा। यह सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम की हमारे देश में प्रत्येक शिक्षार्थियों को सर्वोत्तम गुणवता वाली उच्च शिक्षा प्राप्त हो। भौगोलिक बाधाओं के बावजूद देश भर के सभी शिक्षार्थियों के लिए किफायती लागत है।

स्वयं के द्वारा शिक्षार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा उपलब्ध हो सके तथा स्वयं पोर्टल के द्वारा शिक्षार्थियों व शिक्षकों की शिक्षण कौशल में सुधार कर शिक्षण गुणवता में वृद्धि करना है। स्वयं पोर्टल के प्रशिक्षण से शिक्षकों के शिक्षण कौशल गुणवता वृद्धि हो पाई है या नहीं।

४. सम्बन्धित साहित्य

स्तुति मिश्रा 2021 में झारखण्ड के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों की ऑनलाइन शिक्षा पर अपना शोध अध्यय प्रस्तुत किया। उद्देश्य सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा की बाधाओं का अध्ययन करना। सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों में ऑनलाइन शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना। निष्कर्ष ऑनलाइन शिक्षा को झारखण्ड के सरकारी स्कूल के बालकों के माता–पिता भी बालकों को महत्व नहीं दे रहे। झारखण्ड के सरकारी स्कूल में 115 बालकों में से 20 से 25 बच्चों के द्वारा ही ऑनलाइन शिक्षा में हिस्सा लिया जा रहा है।

विपुल पैकरा 2021 में 15 लड़कियों की कक्षा 1 से लेकर आठवीं तक के छात्रों का ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव पर अपना शोध अध्ययन प्रस्तुत किया। उद्देश्य जिन बालकों के माता–पिता कोरोना के चलते बेरोजगार हुए, उनके बालकों पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना। ऑनलाइन कक्षाओं के बालकों की सीखने की स्थिति का आकलन करना। **निष्कर्ष** कोरोना के दौरान जिन बालकों के माता–पिता बेरोजगार हो गए, उनके लिए यह शिक्षा फायदेमंद साबित नहीं हुई।

ऑनलाइन कक्षा जो बालक नियमित ले रहे है, वे भी औरों की तुलना में ऑनलाइन शिक्षा से कम सीख रहे है।

कोलकात्त रिसर्च सेंटर (2021) में विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा प्रभाव का शोध अध्ययन प्रस्तुत किया। उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था में छात्रों को उचित शिक्षा मिल रही है या नहीं, का अध्ययन करना। निष्कर्ष इस शोध का यह निष्कर्ष निकला कि ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों में असमानता बढ़ रहीं है।

डॉ. अरविन्द कुमार (2021) ने उत्तर प्रदेश के रूहेलखण्ड क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण पर शोध अध्ययन किया। उद्देश्य इस शोध का उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। निष्कर्ष इस शोध का निष्कर्ष यह निकलता है कि शिक्षक से सीधे अन्तः क्रिया नहीं होने के कारण वे ई–कंटेंट को गम्भीरता से नहीं ले पाते है तथा उनकी रूचि इसमें धीरे धीरे कम हो रही है।

शिवम श्रीवास्तव एवं अनिता वर्मा (2021) ने उत्तर प्रदेश के छात्र किसान पीजी कॉलेज की छात्राओं पर कोविड–19 में सूचना एवं संचार तकनीकी का शैक्षिक योगदान पर अपना शोध अध्ययन प्रस्तुत किया। उद्देश्य इस शोध का उद्देश्य कोविड–19 के दौरान सूचना एवं संचार तकनीकी का शिक्षा पर जो योगदान दिया, उसका अध्ययन करना है। निष्कर्ष इस शोध से यह निष्कर्ष निकला है कि कोविड–19 के दौरान लॉकडाउन के कारण बालकों की शिक्षा रूक गयी थी, लेकिन सूचना एवं संचार तकनीकी के माध्यम से बिना रूके लगातार वापस चल पायी।

५. समस्या कथन

स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म के प्रति बी.एड. महाविद्यालय के व्याख्याताओं की जागरूकता अध्ययन करना।

६. शोध के उद्देश्य

स्वयं लर्निंग प्लेटफार्म के प्रति ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. महाविद्यालय की महिला व्याख्याताओं की जागरूकता का अध्ययन करना।

७. परिकल्पनाएं

स्वंय ऑनलाईन लर्निंग प्लेटफार्म के प्रति बी.एड. महाविद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरूष व्याख्याताओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

८. अध्ययन में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

९. न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकत्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के 200 बी. एड. व्याख्याताओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति की लॉटरी विधि द्वारा किया गया।

१०. अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी के द्वारा गणना की गई है।
1. टी–परीक्षण 2. बार ग्राफ

परिकल्पना : स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म के प्रति बी.एड. महाविद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र की महिला व पुरूष व्याख्याताओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (SD)	टी–मूल्य (t-value)
1	ग्रामीण महिला व्याख्याता	100	14.6	1.30	1.08
2	ग्रामीण पुरूष व्याख्याता	100	15	1.30	

$df = n_1 + n_2 - 2 = 100 + 100 - 2 = 198$

0.05 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य – 2.021

0.01 स्तर पर टी का अपेक्षित मूल्य – 2.704

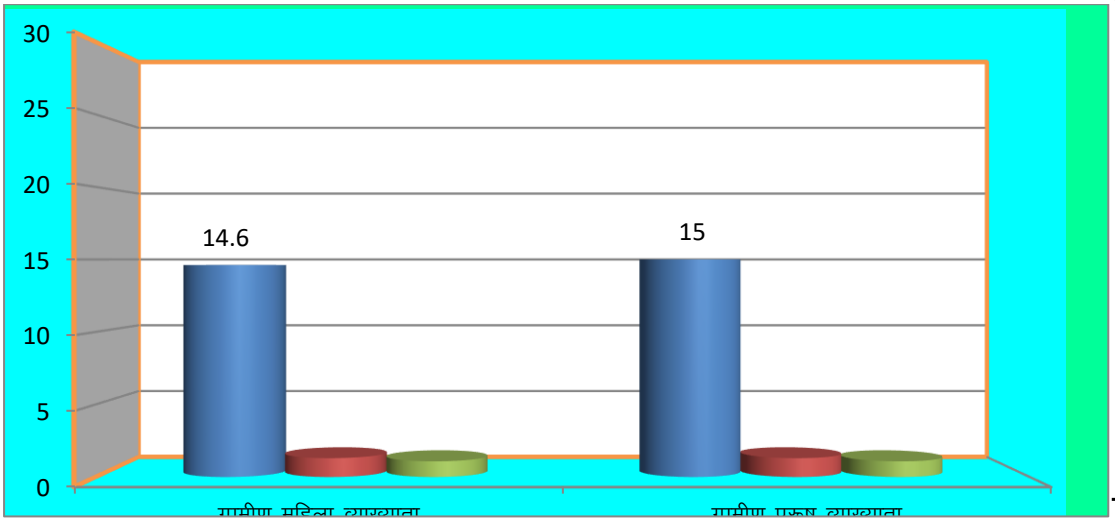

परिणाम – उपरोक्त तालिका 1 जयपुर के महाविद्यालय के ग्रामीण महिला व ग्रामीण पुरूष बी.एड. व्याख्याताओं की स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म के प्रति जागरूकता को प्रदर्शित करती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df = 48 का ही तालिका मूल्य 0.0.05 व 0.01 स्तर पर क्रमशः 2.021 व 2.704 है। गणना करने पर टी का प्राप्त मूल्य 1.08 है जो की तालिका से प्राप्त मान से कम है। अतः निराकरणीय परिकल्पना बी.एड. महाविद्यालय के ग्रामीण महिला व पुरूष व्याख्याताओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है महाविद्यालय के ग्रामीण महिला व पुरूष बी.एड. व्याख्याताओं की स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म के बारे में समान जानकारी है। अतः ग्रामीण महिला व पुरूष बी.एड. व्याख्याता स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म से शिक्षा व शिक्षा संबंधित समस्याओं का लाभ उठा रहे है तथा शिक्षा को निरन्तर जारी रखने में सहयोगी है।

११. निष्कर्ष

शोधकत्री द्वारा निर्धारित बी.एड. महाविद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र की महिला व पुरूष व्याख्याताओं की जागरूकता के मध्य टी मान 1.08 प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना स्वीकृत है। अतः स्वयं ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफार्म के प्रति बी.एड. महाविद्यालय के ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरूष बी.एड. व्याख्याताओं का सकारात्मक दृष्टिकोण है। शिक्षा प्रणाली को सुचारू रूप से जूड़े रहने में डिजिटल शिक्षा से कभी भी कही भी शिक्षा को आगे बढ़ा रहे है। जिससे व्याख्याताओं पर सकारात्मक प्रभाव होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. एफ. जे. मैकगुईन :''एक्सपेरीमेंटल साइकोलॉजी'' प्रेटिंस हॉस प्रा.लि. 37
२. Kartinger F.N.: "Foundation of Behavioural Research", Holl Riemhort and idll sun, new
३. लता शर्मा, वन्दनाः ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'', राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर–39
४. जॉन डब्ल्यू बेस्ट : Research in Education (1969). प्रेंटिस हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
५. कार्टर वी. गुड. और स्केट्स डी ई. "मैथड्स ऑफ रिसर्च," न्यूयार्क एलटन सैचुरी इंक (1954).
६. मंगल, एस. के. (1996). टिचिंग ऑफ जनरल सांइस आर्य बुक डिपो।.
७. www.wikipedia.com
८. www.shodhganga.com
९. https://oaji.net
१०. https://communicationtoday.net
११. https://www.aprimaati.com
१२. ringer.com
१३. www.wikipedia.com